

बाबा ने कहा, याद की यात्रा में रहो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे, क्योंकि याद हैं तलवार की धार, इसमें अपने आपको ठगना नहीं.

हम जानते हैं की एक बाबा की याद से ही हमारे लास्ट 63 जन्मों के विकर्म विनाश होने हैं और एक बाप की याद से ही हम इस अमूल्य ब्राह्मण जीवन में कोई भी नया विकर्म करने से भी बच जाते हैं. तो बाबा की याद ही हमारे लिए एक संजीवनी बूटी हैं जो आत्मा में नव-चेतना जाग्रत करती हैं और बाबा की याद ही हमारी माया से रक्षा करती हैं.

ऐसे बाप को हम भूलते क्यों हैं? इसका सही जवाब हैं हम भूलना तो नहीं चाहते हैं लेकिन हम खुद की सच्चाई-सफाई से चैकिंग नहीं रखते हैं और इसी वजह से माया से हार खा लेते हैं. तो अगर हमें इस कलयुगी दुनिया में रहते, जहाँ सब आत्मायें और प्रकृति के पांच तत्वों भी संपूर्ण तमोप्रधान हैं, सर्वस्व माया का राज्य हैं, ऐसी दुनिया में स्वयं को बचाने का एक ही रास्ता हैं - बाबा की याद और हमारी ऑनेस्ट चैकिंग.

बाबा हमें दो बातों का चार्ट सदा रखने को कहते हैं -- याद का चार्ट और कर्मों का चार्ट. कर्मों के चार्ट का कनेक्शन याद के चार्ट से हैं. अगर हमारी याद का चार्ट एक्युरेंट हैं तो हमारा कर्मों का चार्ट बहुत अच्छा होगा.

हम जब याद का चार्ट बनाते हैं तो उसमें स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित कर बाप को कितनी बार याद किया वही लिखना हैं, ऐसे नहीं की मुझे तो चलते-फिरते बाबा की याद रहती हैं और उस को भी याद के चार्ट में लिख दिया. स्वउन्नति के लिए याद का चार्ट बहुत सच्चाई से लिखना हैं.

कर्मों के चार्ट में बाबा ने जैसे आज बताया की, दिन भर में हमने किसी भी अन्य आत्मा को मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं दिया? दूसरा हैं, व्यर्थ संकल्प में, व्यर्थ बातों में या व्यर्थ कर्मों में हमारा संगमयुग का अमूल्य समय तो नहीं गवाया? तीसरा हैं कितना समय, मनसा सेवा की और कर्मन्द्रियों द्वारा यज्ञ सेवा की?

चार्ट को एक्युरेंट बनाने का एक रास्ता हैं, हर दिन घंटे चार्ट को अपडेट करें जिससे हम अपने हर कर्म को और याद को सच्चाई से लिख सके.

ॐ शान्ति.